विचार बिन्दु

चरित्र वृक्ष है और प्रतिष्ठा उसकी छाया। –अब्राहम लिंकन

नई पीढ़ी ने व्यक्तित्व को समस्या बना दिया है

इन्सान के व्यक्तित्व के हर पहलू को इन दिनों एक समस्या के रूप में देखा जाने लगा है, जिससे नई पीढ़ी में बेचैनी और अवसाद बढ़ता जा रहा है। कोई भी चीज़ जो बहुत ज़्यादा मानवीय हो, जैसे कोई आदत, कोई अजीब बात, कोई गहरी भावना, उन्हें ऐसी समस्याओं के रूप में देखा जाता है जिसे थैरेपी से सुलझाना जरूरी है। साइको-थैरेपिस्टों का नया पेशा परवान चढ़ गया है। थैरेपिस्ट हमारी समस्याओं को पहचान देते हैं, उन्हें हमें समझाते हैं, और उसका इलाज प्रेसक्राइब करते है। ये थैरेपिस्ट हमें समझाते हैं कि हमें कैसे बोलना चाहिए; कैसे व्यवहार करना चाहिए। इन थैरेपिस्टों ने जीवन में रोमांस और रिश्तों के बारे में हमारी सोच को ही खराब कर दिया है। चोट और तकलीफ़ के बारे में हमारी सोच को भी बिगाड़ दिया है। उन्होंने हमें ऐसे भ्रम में ला पटका है कि हम हर चीज दार्शनिक लहजे में सोचने लगे हैं कि हम कौन हैं। अब किसी की कोई अपनी पर्सनैलिटी नहीं है, जो है वह उसकी समस्या है। असल में हमें सिखाया जा रहा है कि हमारी पर्सनैलिटी एक डिसऑर्डर है। यह 'मैन्टल इलनेस' (मनोरोग) का एक ऐसा आभासी जाल है जिसमें जनरेशन ज़ेड फंस कर असामान्य होती जा रही है। आधुनिक जीवन की हर चीज़ को साइकोलॉजिकली, साइंटिफिकली, इवोल्यूशनरी तौर पर समझना नई पीढ़ी की गहरी आदत का हिस्सा बन गया है। इस पीढ़ी के लिये जीवन में हर चीज़ की वजह होनी चाहिए, जिसे कैटेगराइज़ किया जा सके और उसे ठीक किया जा सके। जनरेशन ज़ेड थ्योरीज़, फ्रेमवर्क, सिस्टम, स्ट्रक्चर, ड्राइव्स, मोटिवेशन्स और मैकेनिज़्म में बात करती है। मगर हर चीज का एक्सप्लेनेशन खोजते हुए वे जीवन की मिस्ट्री, रोमांस और खुद को खो रहे हैं। नई पीढ़ी लोगों के बारे में बताने के सेंटीमेंटल तरीके खो रही है। एक समय था जब कोई हर जगह लेट हो जाता था सभी उसे प्यार से भुलक्कड या लेट-लतीफ़ कह देते थे। मगर अब हम मानते है कि वह 'अटेंशन-डेफिसिट'/'हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर' का शिकार हैं। कोई शर्मीला हैं और लोगों से बात करते हुए नजरें नीची किए रहता है तो वह कोई मुलायम और प्यारा इंसान नहीं है। मनोचिकित्सकीय सलाहकार कहता है वह आत्मकेंद्रित है। मनोचिकित्सक/थैरेपिस्ट के पास हर व्यवहार का निदान है क्योंकि उसके हिसाब से वह रोग है। अब मनुष्य अपने पुरखों का मिला-जुला रूप या अजीब आदतों का समूह नहीं होता हैं, बल्कि बचपन की घटनाओं की टाइमलाइन का क्लिनिकल नतीजा होता हैं। दिल से निकली हर बात परेशान करने वाली हो या दिलचस्प, उसकी कैटेगरी बना डी गई है। कभी जो बातें मुस्कान के साथ याद की जाती थीं, अब डॉक्टरों के नोट्स और मेंटल-हेल्थ असेसमेंट और बैटर-हेल्प एप्लीकेशन पर ज़िंदा हैं। अब इंसान नहीं रहे। अब सब प्रोडक्ट हैं, और थैरेपिस्टों ने सबके लिये लेबल बना रखे हैं। अब दिलदार लोग नहीं होते हैं, सिर्फ़ लोगों को खुश करने वाले लोग होते हैं। ऐसे लोग नहीं हैं जो अपना दिल खोलकर रखते हों। अब तो सिर्फ़ बेचैनी से जुड़े हुए या को-डिपेंडेंट लोग हैं। मेहनती लोगों की जगह सिर्फ़ ट्रॉमा झेल चुके, इनसिक्योर, ओवरअचीवर, न्यूरोटिक रूप से एम्बिशियस लोग हैं।

मुश्किल यह है कि लोगों की मर्ज़ी के बिना भी उन्हें इस तरह श्रेणीबद्ध किया जाता हैं। नए चलन के हिसाब से अनाड़ी माओं को अपने 'अटेंशन-डेफिसिट/हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर' का पता ही नहीं होता है; हमेशा शांत रहने वाले पिता को पता ही नहीं चलता कि वे ऑटिस्टिक हैं; शांत रहने वाले दादा इमोशनली रुके हुए हैं। हमने सिर्फ़ पर्सनैलिटी ट्रेट्स ही नहीं खो दिए हैं, बल्कि अब कोई अनुभव भी नहीं रहा है, ज़िंदगी के कोई फेज़ या सीज़न नहीं हैं, कोई अजूबे या रहस्य नहीं हैं, सिर्फ़ सुराग हैं कि हमारे साथ क्या गलत हो सकता है और उसके निदान हैं। इंसान जो कुछ भी होता है, उसे समझाया जा सकता है; कुछ भी छूट नहीं है। हम यह मान नहीं सकते कि हम किसी से पागलपन में और बिना सोचे-समझे प्यार करते हैं। हमें सोचने का सही तरीका समझाया जाता है कि हम उसके आर-पार देखें, यह जानें कि असल में क्या हो रहा है, छिपे हुए मकसद खोजें। हम किसी पर फ़िदा होते हैं, यह सिर्फ़ एक ट्रॉमा रिस्पॉन्स है। वे कहते हैं तुम्हें कोई क्रश नहीं है; तुम्हें अटैचमेंट की दिक्कती हैं। याद दिलाया जाता है कि बचपन में किसने आपको चोट पहुंचाई थी। असल में, अब कोई फीलिंग्स ही नहीं हैं, सिर्फ़ डिसरेगुलेटेड नर्वस सिस्टम हैं। हमारा हर इंसानी अनुभव एक डेटा पॉइंट है, और हमारी ज़िंदगी का मकसद उन सबको एकदम सही तरीके से जोड़ना है। यही सोचने का अब स्वस्थ तरीका बताया जा रहा है। अब हम अब पिछली पीढ़ियों से ज़्यादा समझदार और इमोशनली ज़्यादा इंटेलिजेंट जो हो गये हैं। बेशक, पहले भी ऐसे लोग थे जिन्हें असली बीमारियों के लिए असली मदद की ज़रूरत होती थी, जो उन्हें कभी नहीं मिली। लेकिन यह पूरी कहानी नहीं है। कई लोग ज़्यादा खुश भी थे, कम सेल्फ-कॉन्शियस थे, वास्तव में खुद को भूल पाते थे। यह अतीत को याद करना नहीं है, लेकिन वहां कुछ ऐसा था जो खो गया है। वह शायद जीने का एक आसान तरीका था। अब हमारा अहं है, जो हमें परेशान और कन्फ्यूज्ड करता है। आज की पीढ़ी रिश्तों और पेरेंटहुड जैसी चीज़ों में अटक जाती है। जिन प्रतिबद्धताओं पर हम अटक जाते हैं, जिन फैसलों पर हम लगातार बहस करते हैं, जिन परंपराओं को निभाना हमें मुश्किल लगता है, वे अक्सर ऐसी होती हैं जिन्हें हम सहज रूप से समझा नहीं पाते। हम उसे अकादमिक तौर पर समझाने की कोशिश करते। सिंगल रहने के मुकाबले रोमांटिक प्यार का बचाव करना अब मुश्किल हो चला है। बच्चे पैदा करने के साथ भी ऐसा ही है। इन चीज़ों को फायदे और नुकसान की लिस्ट में डाल दिया जाता है। पुरानी पीढ़ी में किसी से पूछें कि उन्होंने परिवार क्यों शुरू किया? इस बारे में उसने कभी सोचा ही नहीं। लेकिन यह उतना पागलपन भरा नहीं है जितना हमें यकीन दिलाया जाता है, या यह इतना लापरवाही भरा भी नहीं है। इसमें कुछ इंसानी बात है।

असल में हमें सिखाया जा रहा है कि हमारी पर्सनैलिटी एक डिसऑर्डर है। यह 'मैन्टल इलनेस' (मनोरोग) का एक ऐसा आभासी जाल है जिसमें जनरेशन ज़ेड फंस कर असामान्य होती जा रही है। आधुनिक जीवन की हर चीज़ को साइकोलॉजिकली, साइंटिफिकली, इवोल्यूशनरी तौर पर समझना नई पीढ़ी की गहरी आदत का हिस्सा बन गया है। इस पीढ़ी के लिये जीवन में हर चीज़ की वजह होनी चाहिए, जिसे कैटेगराइज़ किया जा सके और उसे ठीक किया जा सके।

यह पीढ़ी 38 बिलियन डॉलर की मेंटल हेल्थ इंडस्ट्री से प्रभावित है, जो पहले नहीं थी। इंटरनेट हमें ज़्यादा जानने देता है, इसलिए दुनिया ज़्यादा मुश्किल लगती है। नई पीढ़ी के लोग अपने जीवन पर नियंत्रण और पक्कापन चाहते हैं। वे समझदार होने का आराम महसूस करना चाहते हैं। वे हर चीज़ की वजह जानना चाहते है। यही उन्हें दुखी कर रहा है। यह अजीब लग सकता है कि बेरहमी से जानने को हम आज़ादी मानते हैं। खुद पर नज़र रखना, जीने का आज़ाद तरीका है। हम किसी तरह कम दबे हुए हैं। सभी मेडिकल लेबल में बंधे हुए हैं। ऐसे युवा भी हैं जो अपनी ज़िंदगी के सबसे बेफ़िक्र साल खुद को मैप करने, कंपनियों और एडवरटाइज़र के लिए खुद को कैटेगरी में बांटने में बिता रहे हैं। हमने एक पीढ़ी को सिखाया कि ज़िंदगी का मतलब बाहर दुनिया में नहीं बल्कि उनके अपने दिमाग में है। हम इसे कम आंकते हैं, खुद को समझने के इस दुखी काम को। बहुतों कोई यह देखकर दुख होता है कि हमने एक पीढ़ी को यह दिल तोड़ने वाली जागरूकता दी है, जिसकी दुनिया के बारे में एकमात्र समझ यह उग्र खोज है कि हर चीज का कारण ढूंढना है। क्योंकि हम कभी भी सब कुछ समझा नहीं सकते। किसी न किसी बिन्दु पर हमें चीज़ों का विश्लेषण करना और समझना बंद करना होगा और जो पता नहीं है उसे स्वीकार करना होगा। हम असल में बस विश्वास ही पा सकते हैं। और शायद अपने बारे में थोड़ा मसखरापन। इंसान होने से ठीक होना नामुमकिन है, और इसीलिए मेंटल हेल्थ इंडस्ट्री में बहुत ज़्यादा डिमांड है। किसी भी चीज़ को काफ़ी देर तक समझाओ और हमें कोई न कोई बीमारी मिल ही जाएगी; काफ़ी गहराई से खोजेंगे तो हम अपने आप को ही गायब पाएंगे। हमेशा सिखाया जाता है कि सबसे बहादुरी का काम हिम्मत रखना है। लेकिन हर चीज़ को न समझाना, कंट्रोल छोड़ना, अपने स्व में रहने की हिम्मत खो रही है। यह मानना भी समझदारी है कि हम खुद को कभी भी किसी और चीज़ से नहीं समझ पाएंगे, सिवाय इसके कि हम कैसे काम करते हैं, कैसे जीते हैं, और दूसरे लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। नई पीढ़ी ने अपने बारे में काफ़ी सोच लिया हैं। उसे और ज़्यादा अवेयरनेस या जवाबों की ज़रूरत नहीं है। ज़िंदगी भर खुद को समझाने, अपनी मज़बूत भावनाओं को सुलझाने, अपनी पर्सनैलिटी को स्टैंडर्ड बनाने और हर अनुभव को समझने की कोशिश करने के बाद, इस पीढ़ी को शायद यह एहसास हो सकता है कि उनकी एकमात्र समस्या, हमेशा से, इंसान होना थी। आज बुद्ध होते तो यही रास्ता दिखाते कि खुद को अनुभव के लिए आज़ाद करो, किसी एक्सप्लेनेशन के लिए नहीं, सामान्य रहने के लिए। अपनी भावनाओं, फैसलों और यादों को मार्केट की दखलंदाज़ी से बचाएं। मतलबी विशेषज्ञों और मुनाफे वाली मेडिकल इंडस्ट्री से बचें। खुद को थोड़ा अनसुलझा छोड़ दें। कौन जाने? यह एक रहस्य है। सितारों में लिखा हुआ। कहीं अनजान जगह से। अपनी पर्सनैलिटी को बनाए रखना इस बात का ऐलान है कि आप इंसान हैं। एक इंसान, कोई प्रोडक्ट नहीं। इसके लिये किसी और एक्सप्लेनेशन की ज़रूरत नहीं।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

ऊर्जा आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता राजस्थान

सौर और पवन ऊर्जा से लेकर किसानों को दिन में बिजली और ऊर्जा भंडारण तक, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रयासों से प्रदेश में विकास की नई संभावनाएं

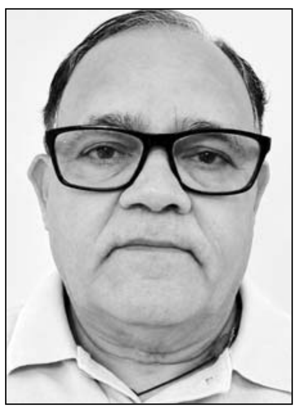

के.सी. वर्मा

ऊर्जा किसी भी प्रदेश की आर्थिक प्रगति, औद्योगिक विकास, कृषि उत्पादन और आमजन के जीवन स्तर को बेहतर बनाने का प्रमुख आधार है। बिजली की पर्याप्त उपलब्धता उद्योगों को गति देने के साथ ही किसानों की लागत घटाने, घरेलू उपभोक्ताओं को राहत देने और रोजगार के नए अवसर पैदा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे में राजस्थान के लिए ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना विकास की अनिवार्य आवश्यकता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार अक्षय ऊर्जा उत्पादन बढ़ाने, विद्युत प्रसारण तंत्र मजबूत करने और किसानों को दिन के समय बिजली उपलब्ध कराने की दिशा में योजनाबद्ध प्रयास कर रही है। राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियां उसे देश में स्वच्छ ऊर्जा का प्रमुख केंद्र बनने की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी हैं। यहां वर्षभर पर्याप्त धूप, अनुकूल पवन परिस्थितियां और बड़े ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना के लिए भूमि उपलब्ध है। राज्य में लगभग 828 गीगावाट सौर ऊर्जा और 284 गीगावाट पवन ऊर्जा की संभावित क्षमता है। इसी सामर्थ्य का परिणाम है कि राजस्थान अक्षय ऊर्जा उत्पादन में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल है।

मई 2026 तक राज्य में 47 गीगावाट से अधिक अक्षय ऊर्जा क्षमता स्थापित हो चुकी थी। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में 29,443 मेगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता में वृद्धि हुई, जबकि पिछली सरकार के पूरे कार्यकाल में यह वृद्धि 15,780 मेगावाट रही थी। राजस्थान एकीकृत स्वच्छ ऊर्जा नीति-2024 के तहत वर्ष 2030 तक 125 गीगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल सौर और पवन ऊर्जा बढ़ाने के साथ ही ऊर्जा भंडारण, आधुनिक प्रसारण व्यवस्था, निवेश और तकनीकी नवाचार को भी समान महत्व दिया जा रहा है।

राजस्थान जैसे कृषि प्रधान राज्य में खेतों में सिंचाई के लिए रात के बजाय दिन में बिजली मिलना किसानों की सुविधा और कृषि कार्यों की उत्पादकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बजट घोषणा के अनुरूप वर्ष 2027 तक प्रदेश के सभी जिलों में किसानों को दिन के समय बिजली उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

इस दिशा में नागौर जिले के बिरलोका में 220 केवी ग्रिड सब-स्टेशन का चालू होना महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लगभग 170 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित इस जीएसएस में 160 एमवीए क्षमता का 220/132 केवी पावर ट्रांसफॉर्मर स्थापित किया गया है। इसके शुरू होने से अजमेर विद्युत वितरण निगम के सभी 14 जिलों में किसानों को दिन के समय दो ब्लॉक में बिजली आपूर्ति की व्यवस्था लागू करने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। अब प्रदेश के 27 जिलों में किसानों को दिन में बिजली दी जा रही है।

राजस्थान में ऊर्जा उत्पादन को ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जोड़ने के लिए पीएम-कुसुम योजना के अंतर्गत विकेंद्रीकृत सौर ऊर्जा परियोजनाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। राज्य में इस योजना के तहत 4,000 मेगावाट से अधिक क्षमता की परियोजनाएं स्थापित हो चुकी हैं, जबकि 6,500 मेगावाट क्षमता की परियोजनाएं आवंटित की जा चुकी हैं। इनसे कृषि क्षेत्र की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने और बिजली व्यवस्था पर दबाव कम करने में सहायता मिल सकती है।

प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत 3.36 लाख से अधिक घरेलू उपभोक्ताओं के यहां सोलर रूफटॉप संयंत्र स्थापित किए जा चुके थे। इससे परिवारों को बिजली खर्च में राहत देने और स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन में भागीदार बनाने की संभावनाएं बढ़ी हैं।

सरकारी भवनों पर भी सौर संयंत्र स्थापित किए जा रहे हैं। एक हजार से अधिक राजकीय भवनों का सौन्दर्यीकरण इस दिशा में उल्लेखनीय पहल है। सौर ऊर्जा को बड़े संयंत्रों तक सीमित न रखकर खेतों, घरों और सरकारी संस्थानों तक पहुंचाना ऊर्जा आत्मनिर्भरता को व्यापक जनभागीदारी से जोड़ता है।

राजस्थान में बड़े पैमाने पर स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन के लिए सौर पार्कों का विस्तार किया जा रहा है। राज्य में राजकीय उपक्रमों और संयुक्त उपक्रमों के माध्यम से 4,670 मेगावाट क्षमता के सौर पार्क स्थापित हो चुके हैं, जबकि 12,000 मेगावाट से अधिक क्षमता के सौर पार्क निर्माणाधीन हैं। नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए वर्तमान सरकार के कार्यकाल में 1 लाख हेक्टेयर से अधिक राजकीय भूमि आवंटित की जा चुकी है।

सौर और पवन ऊर्जा के साथ बैटरी भंडारण, पंप स्टोरेज, बायोफ्यूल, बायो-सीएनजी और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे क्षेत्रों में निवेश की संभावनाएं भी बढ़ रही हैं। इन परियोजनाओं से निर्माण, परिवहन, तकनीकी सेवाओं, रखरखाव और स्थानीय कारोबार में रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं।

अक्षय ऊर्जा की एक प्रमुख चुनौती यह है कि सौर ऊर्जा का उत्पादन दिन के समय अधिक होता है, जबकि बिजली की मांग अलग-अलग समय पर बदलती रहती है। इसी प्रकार पवन ऊर्जा का उत्पादन भी मौसम और हवा की गति पर निर्भर करता है। इसलिए ऊर्जा आत्मनिर्भरता के लिए उत्पादन के साथ बिजली के भंडारण और प्रसारण की पर्याप्त व्यवस्था आवश्यक है। राज्य सरकार ने वर्ष 2030 तक 10 गीगावाट ऊर्जा भंडारण क्षमता विकसित करने का लक्ष्य रखा है।

राजस्थान में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए चार्जिंग नेटवर्क विकसित करने, जैव ईंधन को प्रोत्साहित करने और ग्रीन हाइड्रोजन जैसी नई तकनीकों में निवेश की संभावनाएं तलाशने के प्रयास भी भविष्य की ऊर्जा जरूरतों के अनुरूप हैं। इन पहलों से परिवहन क्षेत्र में स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग बढ़ सकता है और नए औद्योगिक अवसर पैदा हो सकते हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में ऊर्जा क्षेत्र में किए जा रहे प्रयास राजस्थान को स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन, कृषि ऊर्जा सुरक्षा और निवेश के नए केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण हैं। किसानों को पर्याप्त समय और पूरी विश्वसनीयता से बिजली उपलब्ध कराने के साथ ही घरेलू उपभोक्ताओं का खर्च घटाने और उद्योगों को निर्बाध बिजली उपलब्ध कराने में सुधार के भी व्यापक प्रयास किये जा रहे है।

परियोजनाओं को समय पर पूरा करना, विद्युत वितरण कंपनियों की वित्तीय स्थिति सुधारना, तकनीकी एवं वाणिज्यिक छीजत कम करना और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने को भी पर्याप्त महत्व दिया जा रहा है।

राजस्थान के पास प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता और स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में अठाणी बनने की व्यापक संभावनाएं हैं। बिरलोका में 220 केवी जीएसएस का चालू होना इस बात का उदाहरण है कि ऊर्जा क्षेत्र की बड़ी नीतियों को स्थानीय जरूरतों से जोड़कर किसानों तक लाभ पहुंचाया जा सकता है। उत्पादन, प्रसारण, भंडारण और वितरण की योजनाएं निर्धारित समयसीमा में प्रभावी ढंग से लागू करने से राजस्थान ऊर्जा आत्मनिर्भरता के साथ अन्य राज्यों को ऊर्जा देने में सक्षम बन रहा है। ऊर्जा आत्मनिर्भर राजस्थान का अर्थ केवल अधिक बिजली पैदा करना नहीं, बल्कि किसान को दिन में बिजली, परिवार को राहत, उद्योग को भरोसेमंद आपूर्ति और युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। स्वच्छ ऊर्जा और मजबूत विद्युत व्यवस्था का यही समन्वय प्रदेश के आर्थिक विकास को गति देने तथा विकसित राजस्थान के संकल्प को साकार करने का आधार बन सकता है।

–के.सी. वर्मा, आईएएस
(सेनि.)

सीएनडी में स्थित प्रज्ञता – गीता के मैनेजमेंट मंत्र और परिणाम का निष्काम दर्शन

अनीशा सहारण

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के सेंट्रल न्यूज डेस्क (सीएनडी) में एक दीवार पर लगे क्लास रूम बोर्ड पर 'मामनुस्मर युध्य च' शीर्षक लिखा हुआ है। शाम के 4 बजे हैं, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रूप में अपना कॅरियर शुरू कर अब वरिष्ठ सहायक पद पर कार्यरत और कठिन परिस्थितियों में बमुश्किल 12वीं पास कर पाया चन्दू अर्जुन के द्वंद्व और उससे पार पाने के संघर्ष के बारे में आख्यान दे रहा है। चंदू, जिसका वास्तविक नाम चन्द्रकांत शर्मा कुछ पुराने कार्मिक या खास दोस्त ही जानते हैं, कॉरपोरेट डिलेमा केस स्टडी के रूप में बताते हैं कि विधानसभा कवरेज, प्रधानमंत्री के दौरों के कवरेज के समय कई बार उनके सामने डिलेमा आया कि व्यक्तिगत जानकार और वास्तव में फील्ड में सक्रिय पत्रकार का प्रवेश पत्र प्राथमिकता से बने या किसी बड़े मीडिया संस्थान का एक अतिरिक्त पास बनवा दें। दोनों ही मामलों में संगठन और उनके निजी हित टकराते भी हैं और कई बार पूरक भी होते हैं।

ऐसे समय वे श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए सम्बोधन को याद करते हैं, व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठकर संगठन के बड़े लक्ष्य के लिए कड़े फैसले लेते हैं। कई बार फैसले सही साबित हुए, कई बार गलत लेकिन संतोष रहा कि कोई निर्णय गलत नहीं लिया। अब चंदू के इसी बयान से समझा जा सकता है कि उसके और सेंट्रल न्यूज डेस्क के लिए किसी निर्णय का सही या गलत होना परिणाम से तय नहीं होता, निर्णय प्रक्रिया की ईमानदारी और लक्ष्य से तय होता है। यह बहुत बड़ा परिवर्तन है। गुड गवर्नेंस के लिए बेटर एम्पलॉई चाहिए और इन्हें वांछित लक्ष्य प्राप्ति में रिसोर्स बनाने के लिए बेस्ट एन्वायरमेंट चाहिए। बेस्ट एन्वायरमेंट में आज सबसे महत्वपूर्ण है इनर पीस और सीएनडी में आज इस इनर पीस को ठाहण करने, वह भी बिना हायरार्की प्रोटोकॉल के, अहम त्याग कर ग्रहण करने का एन्वायरमेंट है। चंदू की क्लास में संयुक्त निदेशक मनमोहन हर्ष और जसराम मीणा पूर्ण तन्मयता से बैठे हैं। खास इस सेशन के लिए आए ईएनजी सेक्शन उप निदेशक विजय खंडेलवाल और राज्य सरकार की सोशल मीडिया संभालने वाली सहायक निदेशक पूनम खंडेलवाल, उसी भावना से बैठे हैं, जैसे साधक अपने गुरु का प्रवचन सुनते हैं। कुछ शंका होती है तो वे अन्य कार्मिकों की तरह प्रश्न भी करते हैं और सब प्रश्नों का चंदू के पास जवाब भी नहीं है। यही अपूर्णता इस पहल को पूर्णता देती है।

अगले दिन चंदू प्रवचक से श्रोता की भूमिका में आ जाता है। चंदू इसी मंच पर अभिषेक मीणा का व्याख्यान सुन रहा है। अभिषेक ने बताया कि बिजनेस स्कूल का स्वॉट एनालिसिस गीता के 18वें अध्याय के श्लोक अधिष्ठानं तथा कर्ता से लिया गया है। उन्होंने पब्लिक सेक्टर बैंक और राजस्थान विश्वविद्यालय में बाबू के पद पर कार्य किया और अब एपीआरओ के रूप में पदस्थ हैं। तीनों रोल अलग शेड और प्रकृति के हैं लेकिन किसी भी कार्य की सफलता के लिए स्ट्रेंथ, वीकनेस और अपॉर्चुनिटी का मूल्यांकन कर अपना 100 प्रतिशत दो और थ्रेट यानी बाहरी कारक दैवीय हस्तक्षेप, अनिश्चितता के लिए बैकअप प्लान तैयार रखें। किसी न्यूज को डेडलाइन पर आधिकारिक तौर पर रिलीज करना संभव नहीं है तो उसके लिए बैकअप प्लान तैयार किया जाता है ताकि जनहित का समाचार सरकारी नियमों का उल्लंघन किए बिना समय पर आम जन तक पहुंचे।

अगले दिन इसी सेशन में सूचना सहायक श्रद्धा शर्मा बताती है कि एआई और रोज बदलते ग्लोबल पॉवर डायनामिक्स और इससे हो रही अनिश्चितता के समय में परंपरागत लीडर की एब्सोल्यूट अथॉरिटी और करिश्मा से ज्यादा महत्वपूर्ण है, स्वीकार्यता। सबसे बड़ा लीडर वह है जो खुद अपनी कमी स्वीकार कर ले। वह संकेत से बताती है कि इसी सेक्शन में एक अधिकारी ने लाइन ऑफ सक्सेशन में उच्च स्थान पर होने के बावजूद अपना अथॉरिटी वाला रोल अघोषित रूप से जूनियर अधिकारी को दे दिया और खुद को प्रशासन के बजाय प्रेस रिलीज, सक्सेस स्टोरीज, आर्टिकल्स, फीचर राइटिंग की ओर मोड़ दिया। इससे संगठन को बहुत फायदा हुआ, निर्णय तेज गति से हुए, कम्यूनिकेशन बैरियर हटा और सरकार की योजनाओं का बेहतर प्रचार-प्रसार सुनिश्चित हुआ।

सीएनडी प्रभारी मनमोहन हर्ष ने अपने सेशन में बताया कि समाज और कॉरपोरेट व सरकारी संगठन में फॉलोवर्स को हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है जबकि संगठन के साझा विजन को धरातल पर उतारने के लिए एनर्जी, स्किल से पूर्ण टीम जरूरी है। लीडर में अब करिश्मा नहीं प्योरिटी, वल्नरेबिलिटी, इगोलेस प्रेजेंस महत्वपूर्ण है। मैं निमित्त मात्र हूं, कोई भी असफलता मेरी है, सफलता टीम की है, यह मैंने भगवदगीता में पढ़ा और समझा और इस पहल का उद्देश्य यही है कि हर फॉलोवर कम्पलीट लीडर और हर लीडर सच्चे फॉलोवर की भूमिका निभा सके क्योंकि जो पीआरओ आज विज्ञापन के बिल के भुगतान में लगा है, उसे कल राजस्थान की युवा नीति पर आर्टिकल बनाना पड़ सकता है। उसे विविध चुनौतियों के लिए ज्ञान और तकनीक से ज्यादा इमोशनल इंटेलिजेंस और सबसे महत्वपूर्ण स्थितप्रज्ञता प्राप्त होने की आवश्यकता है।

नागौर जिले के माडपुरा में 1904 में जन्मे संत रामसुखदास जी महाराज ने वर्ष 2005 में देह त्याग तक श्रीमद्भगवद्गीता का संदेश सरल भाषा में साधक संजीवनी व गीता प्रबोधनी जैसी पुस्तकों और मौखिक आख्यान के माध्यम से आम जन और श्रद्धालुओं तक पहुंचाया। न कोई आश्रम और शिष्य बनाया, न कोई संगठन खड़ा किया। हर्ष को यूट्यूब पर इनके किसी अनुयायी का लिंक मिला, वे ऑनलाइन क्लासेज से जुड़े और इससे जीवन, कर्म, फल, संगठन, स्ट्रेस मैनेजमेंट के बारे में नए अर्थ मिले। भगवदगीता तो बचपन से ही पढ़ी थी लेकिन उसके आध्यात्मिक पहलू से ही परिचय था। अब नए अर्थ सामने आए जो आज के दौर की नई समस्याओं के मौलिक समाधान प्रस्तुत करते हैं।

इस पहल का मूल है–

श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 8, श्लोक 7 से लिए गए 'मामनुस्मर युध्य च' में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तुम हर समय मेरा स्मरण करो और युद्ध भी करो। इस प्रकार अपने मन और बुद्धि को मुझमें अर्पण करके तुम निःसन्देह मुझे ही प्राप्त हो जाओगे। सहायक निदेशक प्रियंका अग्रवाल ने कर्मण्येवाधिकारस्ते वाले श्लोक का कार्मिक के लिए महत्व समझाया। उसने बताया कि कोई बेस्ट काम करता है तो उसे और दूसरे को भी लगता है कि वह काम में खो गया। यही कर्तव्य पालन है। जब आप काम के समय ही रिजल्ट की भी चिंता कर रहे हो तो फिर काम को 100 प्रतिशत कैसे दे सकते हैं। इसी भ्रम, उलझन, फ्रिक्शन से बचाया था श्रीकृष्ण ने अर्जुन को। इससे संसाधनों की बर्बादी रुकती है। मानसिक संसाधन की बर्बादी भी आत्मा और आंतरिक शांति को वही क्षित पहुंचाती है जो भौतिक संसाधनों की बर्बादी धरती मां के पर्यावरण और इसके अस्तित्व को पहुंचाती है। इससे लक्ष्य का निरंतर स्मरण, उसके लिए आवश्यक कर्तव्य पालन और समर्पण की सीख मिलती है। अपना मन और बुद्धि भगवान को समर्पित कर देने से जीवन की शंकाएं समाप्त हो जाती हैं और परम गति की प्राप्ति होती है।

नई दिल्ली के भारत मंडपम में गत 23 अक्टूबर को चिन्मय अमृत महोत्सव में स्वामी चिन्मयानंद के होलोबॉट ने जुलाई 1993 में पीएम मोदी जी से हुई वडोदरा मुलाक़ात में गीता का संदेश युवाओं तक पहुँचाने के अपने आव्हान को मोदी जी द्वारा काफी हद तक पूरा किए जाने की सराहना की। होलोबॉट ने ज़ोर देकर कहा कि जब गीता का संदेश प्रत्येक युवा तक पहुँचेगा, तभी विकसित भारत का निर्माण होगा, जिसे पूर्ण करने का संकल्प प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोहराया। यह दर्शाता है कि गीता और इसका संदेश विकसित भारत और एक बेहतर विश्व के निर्माण के लिए अत्यंत मौलिक और आधारभूत है। गीता का संदेश प्रत्येक युवा, प्रत्येक कार्मिक, प्रत्येक नागरिक और सुशासन (गुड गवर्नेंस) के प्रत्येक स्टेकहोल्डर के लिए पहली ज़रूरत है।

मैंने कक्षा 12 में द पर्स्यूट ऑफ हैप्पीनेस मूवी में विल स्मिथ द्वारा अभिनीत क्रिस गार्डनर पात्र को देखकर कभी डीन विटर रेनॉल्ड्स जैसे संगठन में इंटर्नशिप करने की कल्पना की थी। लेकिन जो मुझे यहां मिला, उसकी तो कल्पना भी नहीं कर सकती थी। मेरे जैसे सामान्य प्रतिभाशाली इंटर्न को सामान्य से दिखने वाले लोगों से बहुमूल्य और असामान्य जीवन मूल्य और मैनेजमेंट मंत्र मिले, जो हावर्ड बिजनेस स्कूल और वार्टन स्कूल में कई लाख डॉलर की फीस वाले कोर्स में संभव नहीं है क्योंकि वहां पढ़ाया जाता है, यहां अप्लाई किया जाता है। इस अद्भुत मंच पर मुझे एक इंटर्न के रूप में कार्य करने और सीखने का यह अमूल्य अवसर प्रदान करने के लिए मैं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और सूचना एवं जनसम्पर्क आयुक्त राकेश शर्मा का सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ।

–अनीशा सहारण
(यंग मीडिया सहायक)

राशिफल

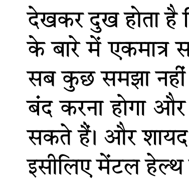

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 28 अक्टूबर, 2026

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत–2083, कृत्तिका नक्षत्र दिन 1:26 तक, व्यतिपात योग प्रातः 7:18 तक, वणिज करण दिन 2:37 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य–तुला, चन्द्रमा–वृष, मंगल–कर्क, बुध–तुला, गुरू–कर्क, शुक्र–तुला, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सम्पूर्ण दिन-रात है। भद्रा दिन 1:32 से रात्रि 1:07 तक है। आज व्यतिपात पुण्यं है।

श्रेष्ठ चौघड़िया– लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:24 तक, शुभ 10:47 से 12:11 तक, चर 2:57 से 4:20 तक, लाभ 4:20 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल– 12:00 से 1:30 तक, सूर्योदय 6:37, सूर्यास्त 5:44

मेष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृष
मानसिक तनाव दूर होगा। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु
विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।